Book review –Ath Nepal Katha writer –pawan patel

आमतौर पर भारत में लोग हमारे पड़ोसी देश नेपाल के बारे में बहुत कम जानते हैं। लोगों की जानकारी अक्सर कुछ चुनिंदा तथ्यों तक ही सीमित रहती है, जैसे कि वह गौतम बुद्ध की जन्मभूमि है या वहाँ दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी सागरमाथा स्थित है। यही कारण है कि मेरे मित्र पवन पटेल की यह नई पुस्तक अत्यंत सराहनीय और महत्वपूर्ण है। पवन ने एक लंबे समय तक नेपाल में रहकर वहां के जमीनी हालातों को जिया है और जेएनयू (JNU) से नेपाल के माओवादी आंदोलन पर अपनी पीएचडी पूरी की है। चूंकि मेरी खुद की पीएचडी भी नेपाल से जुड़े एक विषय पर रही है, इसलिए मैं उनके इस शोध और समझ की गहराई को बेहद करीब से महसूस कर सकता हूँ।

उनकी यह पुस्तक, 'अथ नेपाल कथा: चंद अनुवाद', नेपाल के जाने-माने लेखकों और बुद्धिजीवियों के चुनिंदा लेखों का हिंदी अनुवाद संग्रह है। यह संकलन इतिहास और समाज से लेकर दलित विमर्श और जेंडर (लैंगिक) मुद्दों जैसे आधुनिक विमर्शों को अपने भीतर समेटे हुए है। इसमें शामिल अधिकांश लेख बेहद आलोचनात्मक प्रवृत्ति के हैं और नेपाल के इतिहास को लेकर एक ईमानदार दृष्टिकोण सामने रखते हैं। उदाहरण के लिए, इसमें नेपाली भाषा की एक फीचर फिल्म पर केंद्रित एक तीखा विश्लेषणात्मक लेख है, जिसकी कहानी एक लड़की के बलात्कार के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी तरह, प्रत्युष पन्त का एक बेहद कड़ा लेख काठमांडू के संभ्रांत वर्ग के पाखंड और उनके अहंकार की परतों को उघाड़ता है, जिसका शीर्षक ही है—"सबसे अहंकारी बुद्धिजीवी काठमांडू में पाए जाते हैं।" गद्य के अलावा, यह पुस्तक हिंदी पाठकों को भूपि शेरचन, आहुति, रौशन जनकपुरी जैसे मूर्धन्य नेपाली कवियों की सशक्त और प्रगतिशील कविताओं से भी रूबरू कराती है।

मैं इस भगीरथ प्रयास के लिए पवन को सहृदय बधाई देता हूँ। मुझे यह देखकर बेहद खुशी हो रही है कि उन्होंने हिंदी भाषा में नेपाल जैसे विषय पर इतना बड़ा योगदान दिया है—एक ऐसा विषय जो भारत के बौद्धिक और साहित्यिक विमर्श में दुर्भाग्य से अब तक उपेक्षित और हाशिए पर रहा है।

पवन ने अपनी पुस्तक के लिए जिन विचारकों और कवियों के काम को अनुवाद के लिए चुना है, वे आधुनिक नेपाल की बौद्धिक और सामाजिक चेतना के स्तंभ हैं:

भूपि शेरचन (1935–1989)आधुनिक नेपाल के सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली कवियों में से एक। उन्होंने पारंपरिक छंदबद्ध कविता से हटकर आम बोलचाल की भाषा और मुक्त छंद में लिखा। उनकी कविताएं राष्ट्रवाद के ढोंग, सामाजिक रूढ़ियों और आम इंसान के संघर्षों पर सीधा प्रहार करती हैं।

आहुति नेपाल के एक प्रखर दलित बुद्धिजीवी, लेखक और राजनेता। उनका लेखन नेपाल के पारंपरिक समाज में गहरे धंसे जातिवाद और असमानता को पूरी नग्नता के साथ सामने लाता है। आधुनिक नेपाल के सामाजिक आंदोलनों को समझने के लिए उन्हें पढ़ना अनिवार्य है।

रचनाओं में पहचान के संकट, क्षेत्रीय हाशिएकरण और प्रगतिशील राजनीतिक चेतना को प्रमुखता से उठाते हैं।

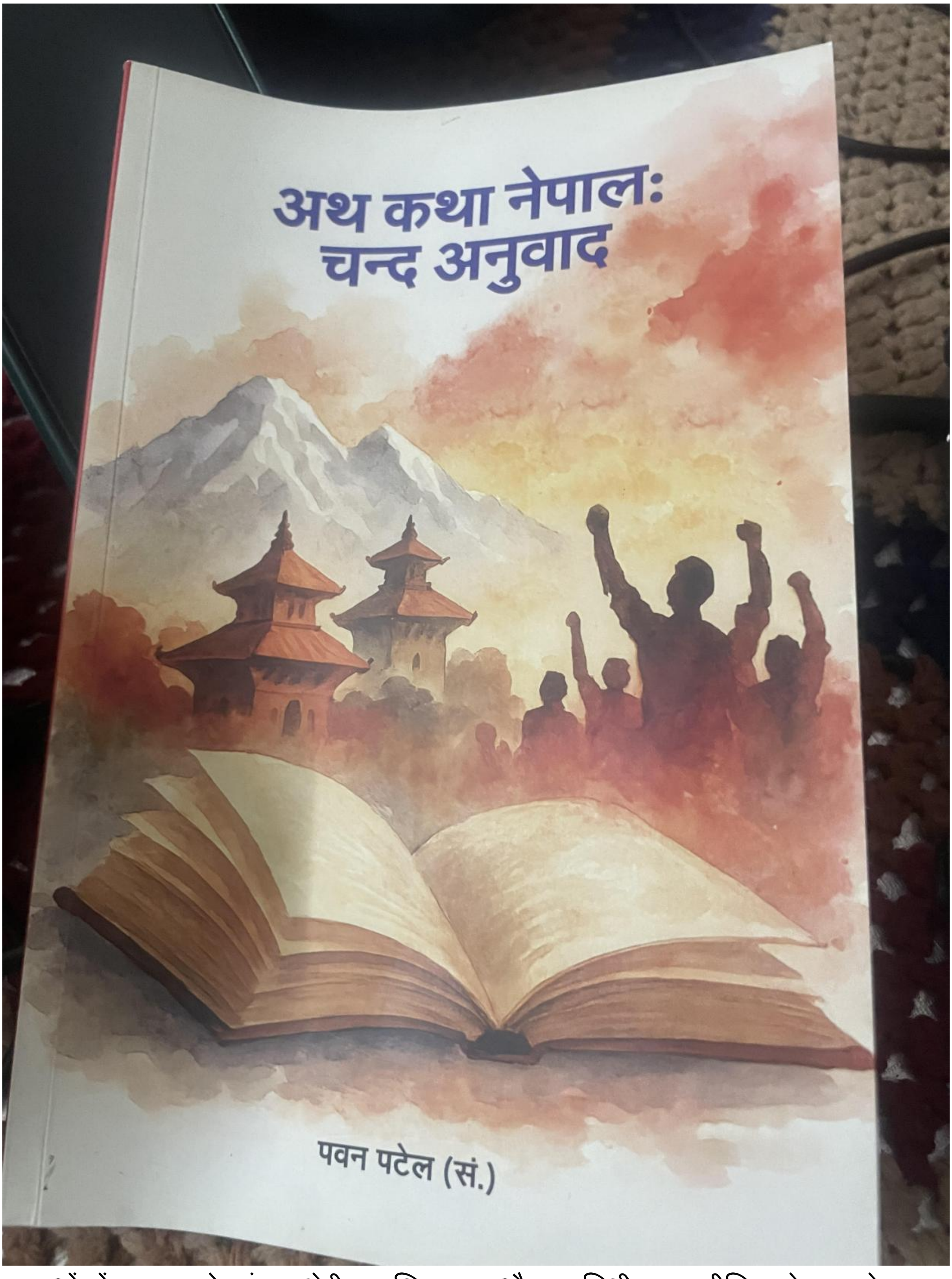

रचनाओं में पहचान के संकट, क्षेत्रीय हाशिएकरण और प्रगतिशील राजनीतिक चेतना को प्रमुखता से उठाते हैं।

यह पुस्तक दो ऐसे देशों के बीच एक मजबूत वैचारिक सेतु का काम करेगी, जो भौगोलिक सीमाएं तो साझा करते हैं, लेकिन एक-दूसरे के भीतर चल रहे गहरे बौद्धिक मंथन से अक्सर अछूते रह जाते हैं

See less